Volume I, Issue XIII
April to June 2017

2016-17

ISSN 2394 - 3807
E-ISSN 2394 - 3513
Impact Factor - 4.455 (2016)

Divya Shodh Samiksha

(An International Refereed/ Peer Review Research Journal)

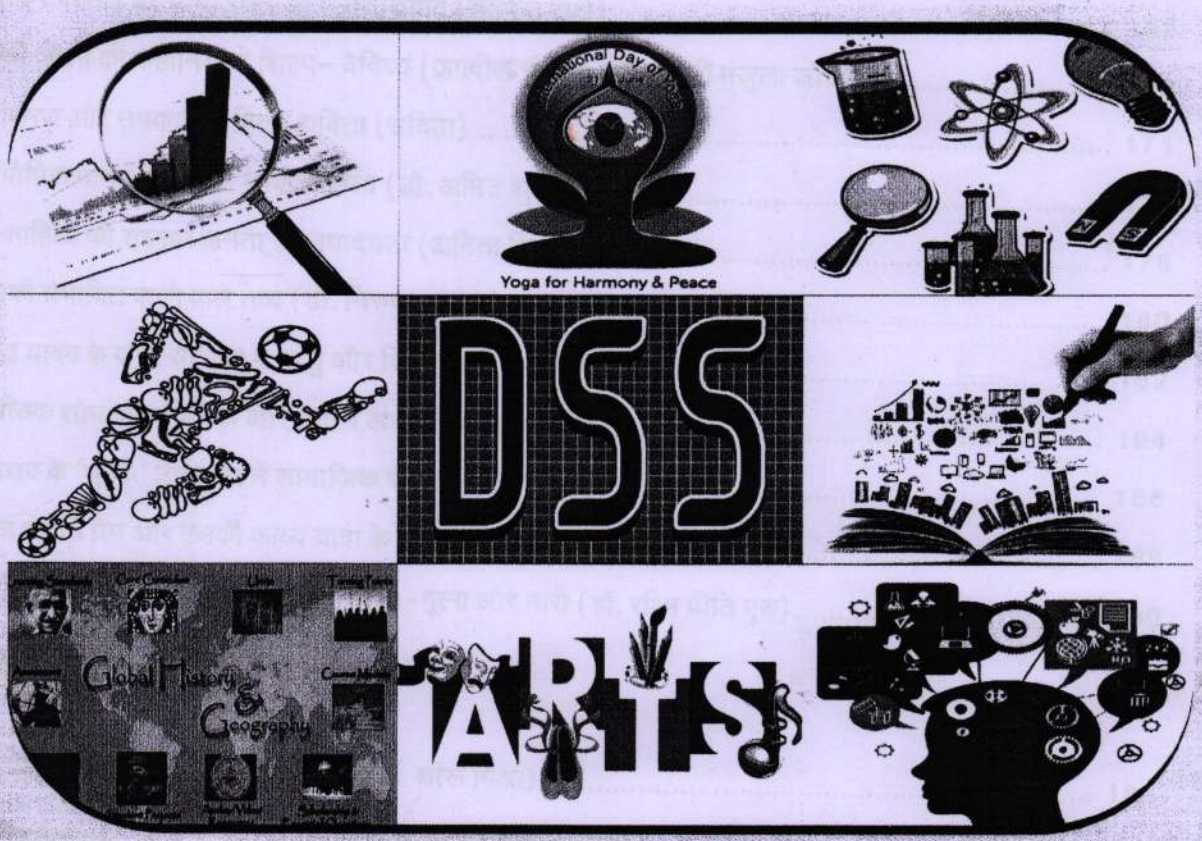

दिव्य शोध समीक्षा

Editor - Ashish Narayan Sharma

Office Add. "Shree Shyam Bhawan", 795, Vikas Nagar Extension 14/2, **NEEMUCH** (M.P.) 458441, (INDIA)
Mob. 09617239102, **Email :** dssresearchjournal@gmail.com, **Website :** www.dssresearchjournal.com

62. An Analytical Study of the Treatment of Love in Ravinder Singh's Selected Novels- "I Too Had a Love Story" and "Can Love Happen Twice?" (Dr. Digvijay Pandya, Apurva Upadhyay) 162

63. Every Man In His Humour as a classical comedy (Dr. Rashmi Nagwanshi) 164

(Hindi Literature / हिन्दी साहित्य)

64. हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाओं में यर्थाथवाद (सोनिया राठी) 165

65. मालती जोशी की कहानियों में शिल्प- वैविध्य (जगदीश चौहान, डॉ. श्रीमती मंजुला जोशी) 168

66. वैश्वीकरण और समकालीन हिन्दी कविता (सविता) 171

67. सार्वभौमिक मानव मूल्य और लोक साहित्य (डॉ. अमित शुक्ल) 175

68. बाल साहित्य की संस्कार क्षमता एवं उपादेयता (अनिता बिरला) 178

69. भाषा को प्रभावित करने वाले तत्व (डॉ. निरुपमा व्यास) 180

70. राजेन्द्र यादव के कथा साहित्य में वस्तु और शिल्प (डॉ. गीता तिवारी) 182

71. साहित्यिक शोध की प्रविधियाँ और उनका अध्ययन (अशोक बैरागी) 184

72. अमृतराय के 'धुआँ ' उपन्यास में सामाजिक चेतना (विद्या बिसेन) 186

73. पंत का प्रकृति प्रेम और उनकी काव्य यात्रा के विविध सोपान (ममता चण्डाला) 188

74. मैत्रीय पुष्पा के कथा-साहित्य में बदलते जीवन-मूल्य और नारी (डॉ. रश्मि प्रीति गुरु) 190

(Sanskrit / संस्कृत)

75. वैदिक पर्यावरण विज्ञान : आधुनिक सन्दर्भ (डॉ. चारू मिश्रा) 192

(Music / संगीत)

76. सितार वादन में गायन की बंदिशों का महत्व (डॉ.अंकित भट्ट) 194

(Drawing & Design / चित्रकला)

77. Overview of Historical collections of Bombay School (Douglas M. John) 196

78. Evolution of moving images from mainstream to Video art and further ahead (Ritesh Kumar, Prof. Himadri Ghosh) 200

79. Aesthetics sense of designing Jewellery (Dushyant Dave) 203

80. कागज के कतरन का कला संसार : चित्रकार उमा शर्मा (मोहम्मद वसीम) 206

81. भारतीय चित्रकला में नारी आकृतियों की भूमिका और सौंदर्य (डॉ. यतीन्द्र महोबे) 208

DSS Divya Shodh Samiksha (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
ISSN 2394-3807, E-ISSN 2394-3513, Impact Factor - 4.455 (2016) April to June 2017

भारतीय चित्रकला में नारी आकृतियों की भूमिका और सौंदर्य

डॉ. यतीन्द्र महोबे *

प्रस्तावना – भारतीय चित्रकला में नारी आकृतियों को अलग-अलग रूप में चित्रित किया गया है। कलाकार ने लौकिक नारी के रूप वैभव से प्रेरणा लेते हुए उसे पुरूष की उत्पत्ति का आदि स्त्रोत, श्रद्धा की देवी, मातृत्व भाव तथा सौंदर्य की पराकाष्ठा आदि विभिन्न रूपों में चित्रित किया है। दूसरे शब्दों में भारतीय चित्रकला में नारी एक आदर्श रूप में दिखाई देती है। कलाकार ने नारी रूप में ऐसे अलौकिक सौंदर्य को दिखाने की चेष्टा की है, जो भारतीय मनीषा के अनुसार 'आदर्श' रही है।

'भारतीय चित्रकला के अध्ययन से प्रतीत होता है कि नारी को दो समूह में विभक्त किया गया है। प्रथम श्रेणी में आत्मिक आकृति जैसे देवी, अशांवतार तथा दूसरी श्रेणी में पृथ्वी पर रहने वाली स्त्रियों की आकृतियाँ। प्रारम्भिक कला में प्रथम श्रेणी की नारियों का अंकन अधिक हुआ है। ये देवी आकृतियां प्रतीकात्मक हैं तथा धर्म द्वारा निर्धारित की गई हैं वहीं दूसरी ओर नारी आकृतियाँ विषय और पृष्ठभूमि की दृष्टि से मानव जीवन से अपना संबंध व्यक्त करती हैं। इन देवी आकृतियों में दुर्गा, लक्ष्मी, गंगा, यमुना आदि को पूज्यनीय स्थान प्राप्त था इसके अतिरिक्त अशांवतार, अप्सरा और गन्धर्व, किन्नरियाँ, नागिनियाँ आदि भी प्रमुख आकृतियों के साथ अंकित हैं।

दूसरी श्रेणी के अंतर्गत वास्तविक जगत में रहने वाली स्त्रियों को कलाकार ने विभिन्न रूपों में जैसे, राजकुमारी, दासी, नर्तकी, माँ, अबला, विभिन्न सामाजिक उत्सवों, तीज-त्यौहारों, जुलूसों आदि में भाग लेती हुई प्रदर्शित (चित्रित) किया है। गुप्तकाल, मध्यकाल तथा आधुनिक काल तक नारी चित्रण कलाकार का प्रमुख विषय रहा, जो भावाभिव्यक्ति से परिपूर्ण है।

'भारतीय कलाकार अपने नारीरूप में 'लोकोत्तर सौंदर्य की प्रतिष्ठा करना चाहते थे। भारतीय कलाकार ने प्रकृति के अक्षय भंडार से नारी देह के प्रत्येक अंग-प्रत्यंग के सौंदर्यवर्धक उपमानों से प्रेरणा लेते हुए अपने कलागत नारीरूप का विन्यास किया है। ये उपमान जहाँ एक ओर सौंदर्यवर्धक हैं, वहीं दूसरी ओर काम उपभोग की दृष्टि से श्रेष्ठ नारी के देह लक्षण भी हैं।

कलाकार ने अपनी कलाकृतियों में नारी सौंदर्य को प्रमुख तत्व माना है। यदि हम अजंता के भित्ति चित्रों पर नजर दौड़ाए तो तात्कालिक कलाकारों ने नारी के अंग-प्रत्यंगों में अपार सौंदर्यतम एवं लावण्यता का समावेश किया है। इन कलाकारों ने भित्ति चित्रों में नारी के नग्न रूप को चित्रित कर उसमें सौंदर्य भाव को विस्थापित किया है। कारण यह था कि नग्न शरीर मानव को आकर्षित करता है और यह स्त्री और पुरूष के पारस्परिक आकर्षण का केन्द्र था तथा कलाकार इस बात से प्रभावित हुआ और इनको सुंदरता शास्त्रीय सुंदरता के नाम से प्रचलित किया। परन्तु यह कहा भी नहीं जा सकता की कलाकारों ने नारी के नग्न स्वरूप में ही सौंदर्य को देखा बल्कि 'भारतीय कला में नारी को नृत्य रूप में भी अभिव्यक्त किया है। सामान्य रूप में इन नृत्य कला ने भावात्मक अभिव्यक्ति की दृष्टि से अंकन परम्परा डाला है। हम विभिन्न गुफाओं और मंदिरों में अंकित चित्रकला और मूर्तिकला में अप्सराओं और गन्धर्वों को विभिन्न नृत्य मुद्रा में देख सकते हैं। उदाहरण स्वरूप बाघ की गुफाओं में नृत्य और संगीत के दो अंकन अति सुंदर चित्रित हैं, एक दृश्य में सात महिलाओं विविध वाद्य यंत्रों के साथ हैं। मध्य में एक नारी नृत्य करती हुई हैं। जिसके सिर पर नीली धारियों से युक्त वस्त्र लिपटा हुआ है। केशों की लटें कंधों पर पड़ी हुई हैं। कंठ में कंठमाला है। शरीर पर पूरी आस्तीन का वस्त्र पहने हुए है नीचे का वस्त्र नीली, पीली, पट्टियों से युक्त है। अन्य आकृतियाँ नग्न अंकित की गई हैं।'

मध्यकाल में राजस्थानी, मुग़ल, पहाड़ी आदि शैलियों में नारी एवं मानव आकृतियों तथा मुखाकृति को साज श्रृंगार से अलंकृत बताया है, जो देखने में काफी मनोरम और सुंदर प्रतीत होता है। उदाहरण स्वरूप मध्यकाल की एक नवोधा सुंदरी को लीजिए उसमें रूप है, साज श्रृंगार है, वस्त्रों से अंगों का परिधान आधा उन्मिलित, आधा निलीमित। इसे हम पहली ही झलक में पहचान लेते हैं। यह परिचय बिल्कुल अद्भुत है, ऐसा लगता है कि नवोधा स्त्री में भावना रस, प्रवणता और अर्थोन्मेश करने वाली प्रतिभा कहीं दूर खड़ी है, तथा उसे ध्यान से देखने पर प्रत्येक परिधान, आभरण, अलंकार, सज्जा, मेंहदी और चंदन इन सबका आशय समझ में आता है। जिसमें सौंदर्य की वृद्धि के लिए 'साहश्य को काम में लाया गया है। जैसे- होठों पर लाल अंगराग का प्रयोग, साथ ही पूरे वातावरण को सौंदर्यमयी एवं भावपूर्ण बनाने के लिए अंकित की गई आकृतियाँ आदि। मध्यकाल की इन नारी आकृतियों में बाह्य सौंदर्य का अपार समावेश दृष्टिगोचर होता है, तात्कालीन कलाकारों ने नारी के इस रूप रमणीयता को प्रस्तुत कर अपनी अद्वितीय कला कौशल का परिचय दिया है।

परिस्थितियों ने समय का बदलाव किया और अंग्रेजों ने भारत में अपना आधिपत्य जमाया। भारत का हर नागरिक अंग्रेजों का गुलाम हो गया, जिसमें भारतीय कलाकार भी शामिल थे। यूरोपीय पद्धति में प्रशिक्षित करने के लिए कला विद्यालय खोले गए और स्त्री-पुरूषों को मॉडल के रूप में बिठाकर प्रशिक्षण दिया जाने लगा, अर्थात मानव आकृतियों का हू-ब-हू चित्रण जिनमें छाया-प्रकाश और रंग-संयोजन प्रमुख था। ये समय 19 वीं शताब्दी मध्य का था, उस समय राजा रवि वर्मा पहले ऐसे कलाकार थे, जिन्होंने भारतीय स्त्रियों का चित्रण अधिकता से किया। राजा रवि वर्मा ने अपनी